नवीन पाठ्यपुस्तकों तथा नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित

संजीव®

आल इन वन

यह संजीव आल इन वन पूर्णतः नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है।

- पाठ्यपुस्तकों के सम्पूर्ण अभ्यास प्रश्नों का हल
- अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- हिन्दी के पद्य पाठ, अंग्रेजी एवं संस्कृत के सभी पाठों का हिन्दी अनुवाद
- हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत में पाठ्यपुस्तकानुसार व्याकरण का समावेश
- सभी महत्त्वपूर्ण मानचित्रों का समावेश

कक्षा 8

मूल्य 800.00

संजीव प्रकाशन, जयपुर

Visit us at : www.sanjivprakashan.com

इस पुस्तक के सम्बन्ध में जानकारी

गुरुजनों से निवेदन

हमारे अनुभवी लेखकों तथा विषयाध्यापकों ने इस पुस्तक में विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की है। वस्तुतः इनमें योग्य एवं अनुभवी शिक्षकों के कठिन परिश्रम का निचोड़ समाविष्ट है। प्रत्येक विषय का सरल प्रतिपादन, पाठ्य सामग्री का वर्णन और सम्प्रेषण छात्रों के स्तरानुरूप हो, इन बातों का पूरा ध्यान रखा गया है। इस पुस्तक में पाठ्यपुस्तकों के अभ्यास प्रश्नों का सम्पूर्ण हल तो दिया ही गया है साथ ही परीक्षा के दृष्टिकोण से अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का भी समावेश किया गया है। इस पुस्तक में सभी प्रमुख विषयों का पाठ्यक्रमानुसार अत्यन्त सारगर्भित वर्णन किया गया है जो कि विद्यार्थी के लिए अत्यन्त लाभप्रद होगा।

आपका सहयोग एवं आगामी संस्करण के लिए आपके बहुमूल्य सुझाव एवं निर्देश अपेक्षित हैं।

प्रकाशक

विद्यार्थियों को पुस्तक के सम्बन्ध में जानकारी

- कक्षा 8 में सत्र 2020-21 से राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल द्वारा NCERT की पाठ्यपुस्तकों को लगाया गया है। इन पाठ्यपुस्तकों में प्रत्येक अध्याय के अन्त में दिए गये अभ्यास प्रश्नों के अतिरिक्त अध्यायों के बीच-बीच में भी विभिन्न प्रकार के प्रश्न दिये हुए हैं। इन प्रश्नों में जो भी प्रश्न विद्यार्थियों के लिये उपयोगी हो सकते हैं उन सभी के उत्तर इस **संजीव आल इन वन** में दिये गये हैं। अध्याय के बीच-बीच में आये इन प्रश्नों को इस **संजीव आल इन वन** में **'पाठ-सार'** के बाद **'पाठगत प्रश्न'** शीर्षक के अन्तर्गत दिया गया है। साथ ही विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पाठ्यपुस्तक में जिस पृष्ठ पर इस प्रकार के प्रश्न दिये गये हैं उसकी पृष्ठ संख्या भी **संजीव आल इन वन** में दी गयी है।
- प्रत्येक पाठ या अध्याय के प्रारम्भ में संक्षेप में उसका सार दिया गया है। हमारे विद्वान लेखकों द्वारा इस पाठ-सार में 'गागर में सागर' भरने का प्रयास किया है। विद्यार्थी इसे पढ़कर पूरे पाठ का निष्कर्ष सरलता से समझ सकते हैं।
- पाठ्यपुस्तकों के समस्त अभ्यास प्रश्नों का सम्पूर्ण हल दिया गया है साथ ही परीक्षा के दृष्टिकोण से अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का भी समावेश किया गया है।
- प्रत्येक पाठ या अध्याय में **वस्तुनिष्ठ, अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक** एवं **निबन्धात्मक** आदि सभी प्रकार के प्रश्नोत्तर दिये गये हैं। परीक्षा में जिस-जिस प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं, उन सभी को इस पुस्तक में दिया गया है।
- यह पुस्तक प्रश्नोत्तर रूप में श्रेष्ठ पुस्तक ही नहीं बल्कि **अभ्यास पुस्तिका** भी है। इसके अध्ययन से विद्यार्थी परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त कर सकेंगे–ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

प्रकाशक

प्रकाशक
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Dept.), जयपुर

कक्षा-8 आल इन वन की विशेषताएँ

* पाठ्यपुस्तकों के सम्पूर्ण अभ्यास प्रश्नों का हल। अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के अन्तर्गत परीक्षोपयोगी सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश।
* पाठ्यपुस्तकों में अध्यायों के बीच-बीच में भी विभिन्न प्रकार के प्रश्न दिये हुए हैं। विद्यार्थियों के लिए उपयोगी इन सभी प्रश्नों के उत्तर 'पाठगत प्रश्न' शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये हैं।
* अंग्रेजी एवं संस्कृत के सभी पाठों का कठिन शब्दार्थ सहित हिन्दी अनुवाद।
* हिन्दी के सभी पद्य पाठों की सप्रसंग व्याख्या।
* हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत में पाठ्यपुस्तकानुसार एवं पाठ्यक्रमानुसार व्याकरण का समावेश।
* सभी विषयों का वर्णन सन्तुलित दिया गया है। किसी भी विषय में न तो अनावश्यक मैटर दिया गया है और न ही किसी Topic को छोड़ा गया है।
* कक्षा 8 के बोर्ड परीक्षा प्रश्न-पत्र में कुछ प्रश्न ऐसे पूछे जाते हैं जिनका उत्तर छात्र सोच-समझकर तथा अपने विवेकानुसार दे सकें। अतः प्रस्तुत पुस्तक में सभी विषयों में इस प्रकार के प्रश्नों को यथास्थान शामिल किया गया है। पाठगत प्रश्नों में भी इस प्रकार के प्रश्न शामिल हैं।

छात्र / छात्रा का नाम ....

कक्षा .... वर्ग ....

विषय ....

विद्यालय का नाम ....

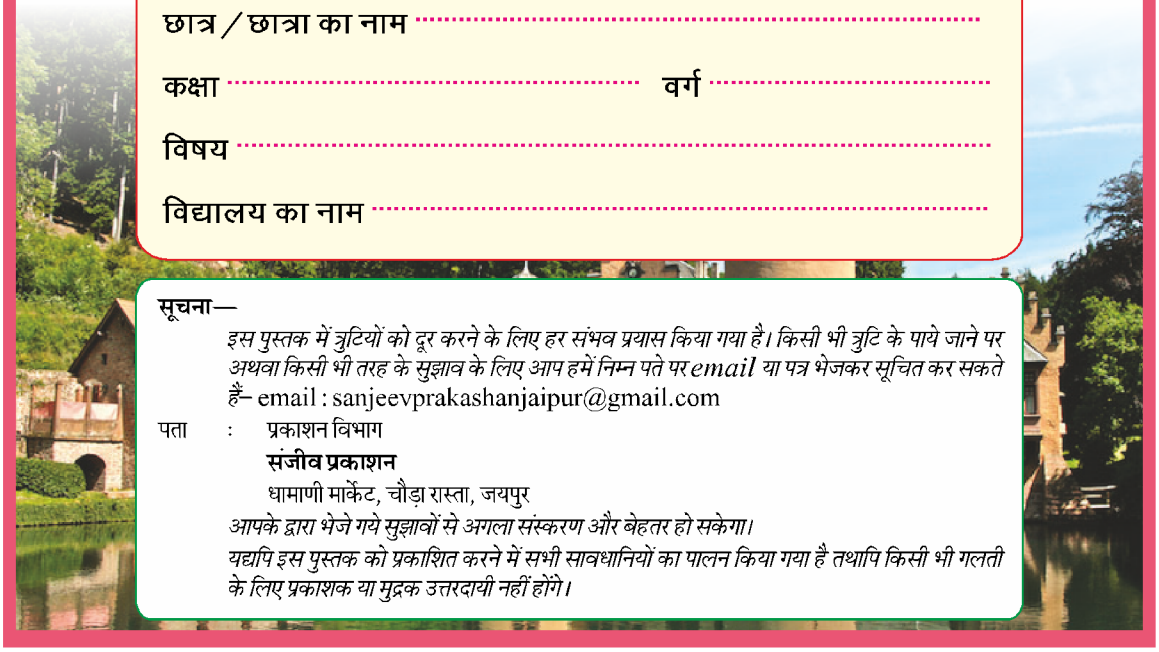

सूचना—

इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं- email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

पता : प्रकाशन विभाग
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

यद्यपि इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सभी सावधानियों का पालन किया गया है तथापि किसी भी गलती के लिए प्रकाशक या मुद्रक उत्तरदायी नहीं होंगे।

आल इन वन

कक्षा-8

विषय-सूची

ENGLISH

HONEYDEW

1. The Best Christmas Present in the World 1
   Poem No. 1
   (i) The Ant and the Cricket 14
2. The Tsunami 18
   Poem No. 2
   (ii) Geography Lesson 29
3. Glimpses of the Past 32
4. Bepin Choudhury's Lapse of Memory 39
   Poem No. 3
   (iii) The Last Bargain 55
5. The Summit Within 59
   Poem No. 4
   (iv) The School Boy 68
6. This is Jody's Fawn 72
7. A Visit to Cambridge 83
8. A Short Monsoon Diary 93
   Poem No. 5
   (v) On the Grasshopper and Cricket 103

GRAMMAR AND VOCABULARY

GRAMMAR

1. Pronoun 106
2. Adjective—Degrees of Comparison 109
3. Adverb 111
4. Word Order in a Sentence 114
5. Preposition 115
6. Tenses (Correct Form of the Verb) 118
7. Determiners 133
8. Modal Auxiliaries 137
9. Usages of has to/have to/had to 139
10. Framing Questions 139
11. Passive Voice 141
12. Reported Speech 143
13. Punctuation Marks and Capital Letters 145

VOCABULARY

1. Number 146
2. Gender 150
3. Opposites 152
4. Word Formation 154
5. One Word Substitution 157
6. Choose the Correct Word 158
7. Sound 160
8. Word Meaning 162
9. Correct Spelling 162
10. Synonyms 163
11. Dissimilar/odd words 163
12. Missing Letters 164

Road Safety 165

READING

Unseen Passages 166-171

WRITING

1. Letter Writing 172-178

2. Application Writing 178-183
3. Paragraph Writing 183-192
4. Story Writing 192-199
Rearrange Sentences 199-202
5. Diary Writing 202-203
6. Notice Writing 203-204
Oral Examination 205-209
Useful Words of Daily Use 209-211

हिन्दी

वसंत : भाग-3

1. लाख की चूड़ियाँ (कहानी) 212
2. बस की यात्रा (व्यंग्य) 218
3. दीवानों की हस्ती (कविता) 225
4. भगवान के डाकिए (कविता) 229
5. क्या निराश हुआ जाए (निबन्ध) 232
6. यह सबसे कठिन समय नहीं (कविता) 239
7. कबीर की साखियाँ 242
8. सुदामा चरित (कविता) 247
9. जहाँ पहिया है (रिपोर्ताज) 252
10. अकबरी लोटा (कहानी) 259
11. सूरदास के पद (कविता) 265
12. पानी की कहानी (निबन्ध) 269
13. बाज और साँप (कहानी) 275
परिवेशीय सजगता, सड़क सुरक्षा एवं स्वच्छता सम्बन्धी प्रश्न 281-286

व्याकरण

1. संज्ञा 287
2. सर्वनाम 289
3. क्रिया 290
4. विशेषण 292
5. विलोम 295
6. पर्यायवाची 296
7. वाक्य रचना 297
8. वचन 299
9. उपसर्ग 300
10. प्रत्यय 302
11. मुहावरे 303
अपठित गद्यांश 306-307

रचना

1. प्रार्थना-पत्र एवं पत्र-लेखन 307-312
2. निबन्ध-लेखन 313-322
3. कहानी लेखन 323-325
4. संवाद-लेखन 325-328
हिन्दी मौखिक परीक्षा 328

संस्कृत

रुचिरा-तृतीयो भागः

मङ्गलम् 329
1. सुभाषितानि 330
2. बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता 334
3. डिजीभारतम् 339
4. सदैव पुरतो निधेहि चरणम् 345
5. कण्टकेनैव कण्टकम् 349
6. गृहं शून्यं सुतां विना 355
7. भारतजनताऽहम् 361
8. संसारसागरस्य नायकाः 365
9. सप्तभगिन्यः 370
10. नीतिनवनीतम् 374
11. सावित्री बाई फुले 379
12. कः रक्षति कः रक्षितः 385

13. क्षितौ राजते भारतस्वर्णभूमि: 391
14. आर्यभट: 396

व्याकरण-ज्ञानम्

1. सन्धि 402
2. उपसर्ग 406
3. प्रत्यय 409
4. अव्यय 414
5. धातु-रूपाणि 415
6. संज्ञा शब्द 421
7. सर्वनाम शब्द 426
8. कारकम् 429
9. विशेषण-विशेष्यशब्दा: 432
10. संख्याज्ञानम् 434

अपठितावबोधनम् एवं रचना कार्यम्

अपठित गद्यांश: 438-440

रचना-कार्यम्

1. निबन्ध-लेखनम् 440-442
2. कथालेखनम् 442-444
3. पत्र-लेखनम् 444-448
4. वाक्य-निर्माणम् एवं चित्र आधारित वर्णनम् 448-451
5. वाक्यक्रम-संयोजनम् 451-453

श्लोक-लेखनम् 453

विज्ञान

1. फसल उत्पादन एवं प्रबन्ध 454
2. सूक्ष्मजीव : मित्र एवं शत्रु 462
3. कोयला और पेट्रोलियम 470
4. दहन और ज्वाला 476
5. पौधे एवं जन्तुओं का संरक्षण 483
6. जन्तुओं में जनन 491
7. किशोरावस्था की ओर 500
8. बल तथा दाब 509
9. घर्षण 517
10. ध्वनि 523
11. विद्युत धारा के रासायनिक प्रभाव 529
12. कुछ प्राकृतिक परिघटनाएँ 536
13. प्रकाश 543

सड़क सुरक्षा एवं स्वच्छता सम्बन्धी प्रश्न 551

गणित

1. परिमेय संख्याएँ 554
2. एक चर वाले रैखिक समीकरण 563
3. चतुर्भुजों को समझना 571
4. आँकड़ों का प्रबन्धन 583
5. वर्ग और वर्गमूल 596
6. घन और घनमूल 612
7. राशियों की तुलना 620
8. बीजीय व्यंजक एवं सर्वसमिकाएँ 630
9. क्षेत्रमिति 638
10. घातांक और घात 653
11. सीधा और प्रतिलोम समानुपात 661
12. गुणनखण्डन 670
13. आलेखों से परिचय 678

सामाजिक विज्ञान

हमारे अतीत-III (इतिहास)

1. प्रारम्भिक कथन : कैसे, कब और कहाँ 687
2. व्यापार से साम्राज्य तक कम्पनी की सत्ता स्थापित होती है 693

3. ग्रामीण क्षेत्र पर शासन चलाना 701
4. आदिवासी, दीकु और एक स्वर्ण युग की कल्पना 709
5. जब जनता बग़ावत करती है 1857 और उसके बाद 715
6. 'देशी जनता' को सभ्य बनाना राष्ट्र को शिक्षित करना 722
7. महिलाएँ, जाति एवं सुधार 729
8. राष्ट्रीय आन्दोलन का संघटन : 1870 के दशक से 1947 तक 736

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन–III

इकाई 1 : भारतीय संविधान और धर्मनिरपेक्षता

1. भारतीय संविधान 746
2. धर्मनिरपेक्षता की समझ 753

इकाई 2 : संसद तथा कानूनों का निर्माण

3. संसद तथा कानूनों का निर्माण 758

इकाई 3 : न्यायपालिका

4. न्यायपालिका 766

इकाई 4 : सामाजिक न्याय और हाशिये की आवाजें

5. हाशियाकरण की समझ 772
6. हाशियाकरण से निपटना 779

इकाई 5 : आर्थिक क्षेत्र में सरकार की भूमिका

7. जनसुविधाएँ 785
8. कानून और सामाजिक न्याय 792

संसाधन एवं विकास (भूगोल)

1. संसाधन 799
2. भूमि, मृदा, जल, प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन संसाधन 803
3. कृषि 812
4. उद्योग 818
5. मानव संसाधन 823

हमारा राजस्थान (भाग-३)

1. 18वीं सदी का राजस्थान 830
2. 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम एवं राजस्थान 833
3. आधुनिक राजस्थान का निर्माण 838
4. जनसंख्या 841
5. उद्योग 845
6. परिवहन एवं पर्यटन 849
7. विकास योजनाएँ 853
8. जन-जागरण एवं सामाजिक सुधार हेतु राजकीय प्रयास 857
9. ग्रामीण व शहरी प्रशासन 862
10. राजस्थान में कला एवं संस्कृति 867

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न 873-880

◆◆◆

ये हम नहीं कहते, जमाना कहता है

संजीव बुक्स है नं. 1

कक्षा 3 से एम.ए. के लिये

राजस्थान पत्रिका — **राजस्थान का प्रमुख दैनिक**

जयपुर, 22 जनवरी , 2024

विद्यार्थियों की पहली पसंद संजीव बुक्स

जयपुर। नए घटनाक्रम, प्रमाणित आंकड़े और सरल भाषा के चलते संजीव बुक्स, इंग्लिश कोर्स, रिफ्रेशर आदि पुस्तकें कक्षा 3 से 12वीं तक के विद्यार्थियों की पहली पसंद बनी हुई हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल ने बताया कि कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन, कक्षा 9 से 12 के लिए संजीव बुक्स प्रकाशित की जा रही हैं। पुस्तकें नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार की गई हैं। इसके अलावा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 5 से 8 के लिए संजीव रिफ्रेशर आल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव रिफ्रेशर प्रकाशित की जाती हैं। प्रत्येक विषय की पुस्तक को योग्य तथा अनुभवी विशेषज्ञ प्राध्यापकों से लिखवाया जाता है। विद्यार्थियों का कहना है कि इसमें उन्हें सरल भाषा में पूरा पाठ्यक्रम, पर्याप्त संख्या में प्रश्न-उत्तर, प्रमाणित आंकड़े, नवीनतम जानकारी उचित मूल्य पर उपलब्ध हो जाती है। विद्यालय स्तर से लेकर कॉलेज स्तर तक संजीव बुक्स अपनी उत्कृष्ट पाठ्यसामग्री के आधार पर सर्वश्रेष्ठ सहायक पुस्तकें बनी हुई हैं।

दैनिक भास्कर — **राजस्थान का प्रमुख दैनिक**

जयपुर, 17 जनवरी , 2024

विद्यार्थियों में सर्वाधिक लोकप्रिय संजीव बुक्स

जयपुर। अपनी उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम, प्रमाणित आंकड़ों तथा सरल भाषा के चलते संजीव प्रकाशन द्वारा प्रकाशित संजीव बुक्स, संजीव इंग्लिश कोर्स, संजीव साइंस पाठ्यपुस्तकें, संजीव रिफ्रेशर आदि पुस्तकें कक्षा 3 से 12 तक के विद्यार्थियों की पहली पसंद बनी हुई हैं। लाखों विद्यार्थी संजीव बुक्स की सहायता से अपनी सम्पूर्ण पढ़ाई कर सफलता अर्जित कर रहे हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल ने बताया कि कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव बुक्स प्रकाशित की जाती हैं। विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी विषय को आसानी से समझने के लिए कक्षा 6 से 12 के लिए संजीव इंग्लिश कोर्स प्रकाशित किये जाते हैं जो कि अंग्रेजी विषय की सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तकें हैं।

दैनिक नवज्योति — **राजस्थान का प्रमुख दैनिक**

जयपुर, 17 जनवरी , 2024

विद्यार्थियों में सर्वाधिक लोकप्रिय संजीव बुक्स

ब्यूरो, नवज्योति/जयपुर। अपनी उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम, प्रमाणित आंकड़ों तथा सरल भाषा के चलते संजीव प्रकाशन द्वारा प्रकाशित संजीव बुक्स, संजीव इंग्लिश कोर्स, संजीव साइंस पाठ्यपुस्तकें, संजीव रिफ्रेशर आदि पुस्तकें कक्षा 3 से 12 तक के विद्यार्थियों की पहली पसंद बनी हुई हैं। संजीव बुक्स की लोकप्रियता के बारे में विद्यार्थियों से बात करने पर उन्होंने बताया कि इसमें उन्हें सरल भाषा में पूरा पाठ्यक्रम, पर्याप्त संख्या में प्रश्न-उत्तर, प्रमाणित आंकड़े, नवीनतम जानकारी उचित मूल्य पर उपलब्ध हो जाती है। इसीलिए सभी विद्यार्थी सहायक पुस्तकों के रूप में संजीव बुक्स को ही खरीदना पसन्द करते हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल ने बताया कि कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव बुक्स प्रकाशित की जाती हैं। विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी विषय को आसानी से समझने के लिए कक्षा 6 से 12 के लिए संजीव इंग्लिश कोर्स प्रकाशित किए जाते हैं जो कि अंग्रेजी विषय की सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तकें हैं। इसी प्रकार कक्षा 11 एवं 12 के साइन्स के विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकता को देखते हुए संजीव साइन्स की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। इसके अलावा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 5 से 8 के लिए संजीव रिफ्रेशर ऑल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव रिफ्रेशर प्रकाशित की जाती हैं।

मित्तल बन्धुओं ने आगे बताया कि उनके द्वारा प्रकाशित संजीव बुक्स सहित अन्य सभी पुस्तकें पूर्णत: नवीनतम पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार कराई जाती हैं।

प्रकाशक : **संजीव प्रकाशन, जयपुर**

ENGLISH—CLASS-8

HONEYDEW

1. The Best Christmas Present in the World

(विश्व का सर्वोत्तम क्रिसमस उपहार)

—Michael Morpurgo

आपके पढ़ने से पूर्व :

विश्व के इतिहास में कुछ तारीखें या कालखण्ड इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि प्रत्येक व्यक्ति उन्हें जानता है और याद करता है। जो कहानी आप पढ़ने जा रहे हैं वह भी ऐसे ही एक दिनांक तथा घटनाक्रम का उल्लेख करती है : अंग्रेजों और जर्मनों के बीच 1914 में हुए एक युद्ध का। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि यह कौनसा युद्ध था?

क्या आप जानते हैं कि निम्न तारीखें किन घटनाओं की ओर संकेत करती हैं?

(a) 4 जुलाई 1776 (b) 17 दिसम्बर 1903
(c) 6 अगस्त 1945 (d) 30 जनवरी 1948
(e) 12 अप्रेल 1961 (f) 20 जुलाई 1969

उत्तर—(a) अमेरिका द्वारा स्वतन्त्रता की घोषणा।

(b) विलबर व ऑरविले राइट ने प्रथम उड़ान भरी, 12 सेकॅण्ड आकाश में उड़े और 120 फीट की ऊँचाई तक आकाश में गए।

(c) हिरोशिमा दिवस : एक परमाणु बम इस दिन जापान के हिरोशिमा नगर पर गिराया गया था।

(d) महात्मा गाँधी की हत्या।

(e) पृथ्वी की परिक्रमा सबसे पहले करने वाला मानव यूरी ए. गागरिन बना।

(f) नील आर्मस्ट्राँग चन्द्रमा पर पैर रखने वाला प्रथम मानव बना।

कठिन शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद

I

I spotted.....on Christmas Eve. (Page 9)

कठिन शब्दार्थ—spotted (स्पॉटिड) = देखा था, **junk shop** (जंक शॉप) = कबाड़ की दुकान, **roll-top desk** (रोल-टॉप डेस्क) = लपेट-सतह वाली मेज, **early nineteenth century** (अर्ली नाइनटीन्थ सेन्चॅरि) = 19वीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों की, **oak** (ओक) = शाहबलूत वृक्ष (इसकी लकड़ी सख्त होती है), **far too expensive** (फार टू इक्सपेन्सिव) = बहुत अधिक महंगे, **condition** (कॅनडिशन) = दशा, **roll-top** (रोल टॉप) = लपेट-सतह (सतह जिसे लपेटा जा सके या तह बनाई जा सके), **several** (सेवरॅल) = कई (दो से कुछ अधिक किन्तु बहुत अधिक नहीं), **pieces** (पीसिज) = टुकड़े, **clumsily** (क्लमजिलि) = बेढंग से, **mended** (मेन्डिड) = मरम्मत की गई थी, **scorch marks** (स्कोच मार्क्स) = झुलसने के निशान, **was going for** (वॉज गोइंग फोर) = बिक रहा था, **thought** (थोट) = सोचा, **restore** (रिस्टोर) = व्यक्ति या वस्तु को उसकी पूर्व दशा या स्थिति में लाना (यहाँ अर्थ है ठीक कर लेना), **risk** (रिस्क) = खतरा, **challenge** (चैलिन्ज) = चुनौती, **paid** (पेड) = कीमत चुकाई/भुगतान किया, **brought** (ब्रोट) = ले आया, **workroom** (वर्करूम) = कार्यकक्ष।

हिन्दी अनुवाद—मैंने इस रोल-टॉप डेस्क (घूमने वाले शीर्ष वाली मेज) को ब्रिडपोर्ट में कबाड़ की एक दुकान में देखा था। उस व्यक्ति (कबाड़ी) ने कहा था कि यह 19वीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में बनी थी और शाहबलूत वृक्ष

की लकड़ी की थी। मुझे ऐसी एक मेज की आवश्यकता थी किन्तु वे बहुत अधिक महंगी थीं। यह वाली मेज बहुत खराब हालत में थी, इसका रोल-टॉप कई टुकड़ों में था, एक पाये की बेढंग से मरम्मत की हुई थी, इसके एक तरफ झुलसने (जलने) के निशान थे। यह बहुत कम कीमत पर बिक (मिल) रही थी। मैंने सोचा मैं इसे ठीक कर सकता था (अर्थात् इसे ठीक करवा लूँगा)। इसमें एक खतरा भी होगा, एक चुनौती भी होगी, किन्तु मुझे इसे लेना ही था। मैंने उस व्यक्ति को कीमत चुकाई और इसे गैरिज (वाहनकक्ष) के पीछे वाले अपने कार्यकक्ष में ले आया। मैंने क्रिसमस की पूर्व संध्या को उस पर कार्य आरम्भ किया।

I removed.....“December 26, 1914”. (Pages 9-10)

कठिन शब्दार्थ–removed (रिमूव्ड) = हटाया, **completely** (कॅमप्लीटलि) = पूरी तरह से, **pulled out** (पुल्ड आउट) = बाहर निकाला, **drawers** (ड्रोर्स) = दराजों, **veneer** (वॅनिअर) = पृष्ठावरण/परत (सजावट या चमक के लिए फर्निचर पर चिपकाये जाने वाली लकड़ी की पतली-सी परत), **water damage** (वॉटर डैमिज) = पानी से खराब हुई हो, **taken their toll on** (टेकन देअर टॉल ऑन) = नुकसान पहुँचाया, **stuck fast** (स्टक फास्ट) = बुरी तरह अटका था, **tried** (ट्राइड) = प्रयत्न किया, **ease out** (ईज आउट) = धीरे-धीरे बाहर निकालना, **gently** (जेन्टलि) = सौम्यता से, **used** (यूज्ड) = प्रयोग की, **brute force** (ब्रूट फोर्स) = पाशविक शक्ति/पूरी ताकत, **struck** (स्ट्रक) = प्रहार किया, **sharply** (शार्पलि) = तेजी से/बलपूर्वक, **fist** (फिस्ट) = मुट्ठी, **flew open** (फ्लू ओपॅन) = एकाएक खुल गया, **reveal** (रिवील) = दर्शाते हुए, **shallow space** (शैलो स्पेस) = खाली स्थान, **underneath** (अंडरनीथ) = अन्दर नीचे का, **secret** (सीकरॅट) = गुप्त, **took out** (टुक आउट) = बाहर निकाला, **sello-taped** (सेलॅ-टेप्ड) = पारदर्शी टेप से चिपकाया हुआ, **lined notepaper** (लाइन्ड नोटपेपॅर) = लाइनदार पत्र-कागज, **a piece** (अ पीस) = एक पर्ची, **shaky** (शेकि) = काँपती हुई, **handwriting** (हैन्डराइटिंग) = लिखाई, **buried** (बरिड) = दफनाया, **curiosity** (क्युरिऑसॅटि) = जिज्ञासा, **scruples** (स्क्रूपल्ज) = नैतिक संकोच, **unfolded** (अनफोल्डिड) = खोला।

हिन्दी अनुवाद–मैंने रोल-टॉप को पूरी तरह से हटा दिया और दराजों को खींच कर बाहर निकाल दिया। पृष्ठावरण लगभग सभी जगह से उतरा हुआ था—मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि यह (पृष्ठावरण) पानी से खराब हुआ हो। आग और पानी दोनों ने अपनी-अपनी तरह से उस डेस्क को नुकसान पहुँचाया हुआ था। आखिरी दराज बुरी तरह से अटकी हुई थी। इसे धीरे-धीरे सौम्यता से बाहर निकालने के लिए मैंने वह सब किया जो मैं कर सकता था। अन्त में मैंने पूरी ताकत का प्रयोग किया। मैंने अपनी मुट्ठी के एक तरफ से इस पर ताकत से प्रहार किया और दराज अन्दर नीचे का खाली स्थान दर्शाते हुए एकाएक खुल गया, (यह) एक गुप्त दराज (था)। इसके अन्दर कुछ था। मैंने अन्दर हाथ डाला और एक छोटा काला टिन बॉक्स बाहर निकाला। इस (बॉक्स) पर एक लाइनदार पत्र-कागज की एक पर्ची सेलोटेप से चिपकी थी और इस पर काँपती हुई लिखाई में लिखा था : ''जिम का (यह) अन्तिम पत्र (था), जो 25 जनवरी, 1915 को प्राप्त हुआ था। जब भी समय आये (अर्थात् मेरी मृत्यु के बाद) इस पत्र को मेरे साथ दफनाया जाए।'' मैं जानता था कि मेरे द्वारा बॉक्स का खोला जाना (नैतिक दृष्टि से) गलत था किन्तु मैंने ऐसा किया क्योंकि जिज्ञासा मेरे नैतिक संकोच पर हावी हो गई थी। ऐसा अधिकतर होता है।

बॉक्स के अन्दर एक लिफाफा था। (इस पर) पता इस प्रकार था : ''मिसिज (श्रीमती) जिम मैक्फरसन, 12 कॉपॅर बीचिज, ब्रिडपोर्ट, डोर्सेट।'' मैंने पत्र को बाहर निकाला और इसकी तह खोली। यह पेन्सिल से लिखा गया था और इसके शीर्ष पर दिनांकित था—''26 दिसम्बर, 1914.''

II

Dearest Connie,.....it wasn’t. (Pages 10-11)

कठिन शब्दार्थ–much happier (मच हैपिअर) = अत्यधिक प्रसन्न, **frame of mind** (फ्रेम ऑफ माइन्ड) = चित्त से, **wonderful** (वन्डॅरफुल) = अद्भुत, **happened** (हैपन्ड) = घटित हुआ, **standing to** (स्टॅन्डिंग टु) = पोजिशन लिए हुए थे, **trenches** (ट्रेन्चिज) = बंकर, **crisp** (क्रिस्प) = तीक्ष्ण, **quiet** (क्वाइअट) = शान्त, **all about** (ओल अबाउट) = आसपास सभी जगह, **cold and frosty** (कोल्ड एंड फ्रॉस्टि) = ठंडी व जमा देने वाली, **ashamed** (अशेम्ड) = शर्मिन्दा होना, **waving** (वेविंग) = लहराते हुए, **fritz** (फ्रिट्ज) = एक जर्मन सैनिक का नाम, **Tommy** (टॉमि) = सामान्यत: एक अंग्रेज का नाम, यहाँ ब्रिटिश सैनिकों के लिए प्रयोग किया गया, **got over** (गॉट ओवॅर) = समाप्त हुआ, **shoot** (शूट) = गोली चलाना, **lads** (लैड्ज) = लड़को, **parapet** (पैरॅपिट) = मुंडेर, **trick** (ट्रिक) = चाल।

हिन्दी–कक्षा 8

वसंत : भाग 3

पाठ 1 : लाख की चूड़ियाँ

(कामतानाथ)

कठिन शब्दार्थ–चाव = रुचि, शौक। **सहन** = आँगन। **सलाख** = छड़। **मचिया** = बैठने के लिए छोटी-सी चारपाई। **पैतृक** = पुरखों का। **पेशा** = व्यवसाय। **खपत** = माल की बिक्री। **कुढ़ना** = खीझना। **नाजुक** = कोमल। **खातिर** = आदर। **विरले** = अनोखे, बहुत कम। **खाट** = चारपाई। **भाँप लेना** = अनुमान लगा लेना। **व्यथा** = पीड़ा। **मुखातिब** = देखकर बात करना। **दृष्टि दौड़ाना** = कुछ देखना। **डलिया** = बाँस की टोकरी। **ठिठकना** = रुकना। **फबना** = बहुत अच्छा लगना। **फसली** = मौसमी।

पाठ का सार–'लाख की चूड़ियाँ' कहानी के लेखक कामतानाथ हैं। इस कहानी में मशीनों के बढ़ते प्रयोग के दुष्प्रभाव को दिखाया गया है। लेखक को उसके मामा के गाँव में बदलू सबसे अच्छा लगता था। वह लाख की चूड़ियाँ बनाता था जिन्हें गाँव व आस-पास के गाँवों की लगभग सभी औरतें खरीद कर पहनती थीं। मशीनों के बढ़ते प्रयोग के कारण जहाँ ग्रामीण औरतें अब काँच की चूड़ियाँ पहनने लगी थीं, वहीं बदलू का लाख की चूड़ियाँ बनाने का कुटीर उद्योग बन्द हो जाने से वह बेरोजगार हो गया था। इस कहानी में मशीनी युग का शिकार हुए व्यक्ति बदलू की पीड़ा का मार्मिक वर्णन किया गया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

कहानी से–

प्रश्न 1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था?

उत्तर–बचपन में लेखक गर्मियों की छुट्टियों में अपने मामा के गाँव चाव से इसलिए जाता था कि गाँव में उसका बहुत मन लगता था तथा उसी गाँव में रहने वाले बदलू मनिहार से लाख की बनी रंग-बिरंगी मनमोहक गोलियाँ मिल जाती थीं, जो कि उसे बहुत प्रिय थीं। बदलू लेखक को आदर-सत्कार के साथ स्वादिष्ट आम और दूध की मलाई खिलाता था। साथ ही लाख की एक-दो गोलियाँ बनाकर देता था।

लेखक बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' इसलिए कहता था, क्योंकि गाँव के सारे बच्चे उसे 'बदलू काका' कहकर ही पुकारते थे।

प्रश्न 2. वस्तु-विनिमय क्या है? विनिमय की प्रचलित पद्धति क्या है?

उत्तर–आवश्यकता के अनुसार एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति से वस्तु के लेन-देन की प्रक्रिया को वस्तु-विनिमय पद्धति कहा जाता है। यह वस्तु लेन-देन प्रणाली हमारे देश में प्राचीन समय में प्रचलित थी। वर्तमान में विनिमय की प्रचलित पद्धति में बहुत अधिक बदलाव आ गया है। इस पद्धति को जारी रखने के लिए अनेक वस्तुओं का संग्रह करना जहाँ कठिन है, वहीं आवश्यकता के अनुरूप लेने वाले व्यक्ति को खोजना मुश्किल है। इसलिए वर्तमान में वस्तु-विनिमय पद्धति बनाए रखना संभव नहीं है। वर्तमान में विनिमय की प्रचलित पद्धति है, पैसा देकर वस्तु खरीदना।

प्रश्न 3. 'मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं?' इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?

उत्तर–आज मशीनों से प्रायः हर काम होने लगा है जिसके कारण कुटीर उद्योग-धन्धे बन्द होते जा रहे हैं। गाँव और शहरवासी जिन कुटीर उद्योग-धन्धों के संचालन के माध्यम से अपनी आजीविका चलाते थे, वे सभी उद्योग-धन्धे अब मशीनों से संचालित होने लगे हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि कुटीर उद्योग-धन्धों का संचालन करने वाले हाथ बेकार हो गये हैं। काम-धन्धे बन्द हो जाने के कारण उनके सामने रोजी-रोटी के लाले पड़ गए हैं। कुछ काम कर सकने वाले हाथ अब निष्क्रिय होते जा रहे हैं। अर्थात् 'बेकार की वस्तु' बन कर रह गये हैं। लेखक ने इसी व्यथा की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 4. बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी?

उत्तर–बदलू एक कुशल मनिहार था। उसकी बनाई लाख की चूड़ियाँ सिर्फ अपने गाँव में ही नहीं, बल्कि आस-पास के गाँवों की भी प्राय: सभी औरतें खुश होकर पहनती थीं। किन्तु अब उसके गाँव की महिलाओं ने मशीन से बनने वाली काँच की चूड़ियों को पहनना शुरू कर दिया था, क्योंकि उनमें सुन्दरता और चमक-दमक अपेक्षाकृत अच्छी थी। परिणामस्वरूप उसकी बनी चूड़ियों की माँग कम हो गयी थी इसलिए उसका काम बन्द हो गया था। यह देखकर वह अपने आप में विवश होकर रह गया। उसकी यह मन की व्यथा लेखक से छिपी न रह सकी।

प्रश्न 5. मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया?

उत्तर-मशीनी युग से बदलू के जीवन में यह बदलाव आया कि उसके गाँव की महिलाओं ने अब काँच की चूड़ियाँ पहननी शुरू कर दी थीं जिसके कारण उसके द्वारा बनाई जाने वाली लाख की चूड़ियों को अब कोई नहीं पूछता था। परिणामस्वरूप उसका पैतृक धन्धा बन्द हो गया था और धन्धे से होने वाली आय समाप्त हो गयी थी। जिसके कारण वह लाचार, अशक्त और कुंठित हो गया था।

कहानी से आगे–

प्रश्न 1. आपने मेले-बाज़ार आदि में हाथ से बनी चीजों को बिकते देखा होगा। आपके मन में किसी चीज को बनाने की कला सीखने की इच्छा हुई हो और आपने कोई कारीगरी सीखने का प्रयास किया हो तो उसके विषय में लिखिए।

उत्तर–मैंने कई बार मेले-बाजार आदि में हाथ से बनी कई चीजों को बिकते हुए देखा है। जैसे—मिट्टी के खिलौने, हाथ के पंखे, बाँस की छड़ों से बनी टोकरियाँ, कागज की लुगदी से बनी कठपुतलियाँ, कागज और कपड़े की सहायता से बनी चिड़ियाँ आदि। इन सबको देखकर मेरे भी मन में आया कि मैं भी कुछ बनाना सीखूँ। हमारे घर के पास ही मिट्टी के खिलौने बनाने वाला रहता था। मैं मिट्टी के खिलौने बनाने की कला सीखने के लिए उसके पास जाने लगा। उसके द्वारा बनाए जाने वाले खिलौनों को मैंने बड़ी सावधानी से और पास से देखा। देखकर समझ में आया कि मिट्टी के खिलौने बनाने के लिए चिकनी मिट्टी का प्रयोग किया जाता है। खिलौने बनाने वाला पहले मिट्टी को तोड़ता है फिर उसे गीला करता है। गीला करने के बाद उस मिट्टी को आटे की तरह गूँथता है। जब मिट्टी खिलौना बनाने के लिए तैयार हो जाती है तब वह उस मिट्टी को बने साँचों में डाल देता है और उन्हें सूखने रख देता है। सूख जाने पर उन्हें साँचों से अलग कर लेता है। वांछित खिलौने के सूख जाने के बाद उसे आँवे में पका लिया जाता है। इसके बाद उसे रंग कर मूल स्वरूप दे दिया जाता है। इस प्रकार मैंने मिट्टी के खिलौने बनाने की विधि सीखी।

प्रश्न 2. लाख की वस्तुओं का निर्माण भारत के किन-किन राज्यों में होता है? लाख से चूड़ियों के अतिरिक्त क्या-क्या चीजें बनती हैं? ज्ञात कीजिए।

उत्तर-लाख की वस्तुओं का निर्माण भारत के विभिन्न राज्यों में जैसे कर्नाटक, उत्तरप्रदेश, गुजरात, राजस्थान आदि राज्यों में प्रमुख रूप से होता है। लाख से चूड़ियों के अतिरिक्त खिलौने, मूर्तियाँ, चपड़ी आदि बनाई जाती हैं।

अनुमान और कल्पना–

प्रश्न 1. घर में मेहमान के आने पर आप उसका अतिथि-सत्कार कैसे करेंगे?

उत्तर–घर में मेहमान आने पर सबसे पहले मैं उन्हें अभिवादन करूँगा। इसके बाद मैं उनका परिचय जानकर ड्राइंग रूम में बैठाऊँगा। उनसे बात-चीत करूँगा। उनके पूछे जाने पर पिताजी के घर पर होने न होने के बारे में बताऊँगा। इसके साथ ही उन्हें जल लाकर दूँगा। कुछ देर बैठने के बाद उनके लिए अल्पाहार लेकर आऊँगा। इसके बाद उनके आने के उद्देश्य के बारे में पूछूँगा। यदि उनकी मुझसे मदद हो सकती है, तो मैं अवश्य करूँगा अन्यथा पिताजी के आने का इंतजार करने के लिए उनसे विनम्रतापूर्वक कहूँगा। यदि वे बैठना चाहेंगे तो ठीक है, नहीं तो उन्हें घर के दरवाजे तक छोड़कर उन्हें अभिवादन करके 'फिर पधारना' कहकर वापस आ जाऊँगा।

प्रश्न 2. आपको छुट्टियों में किसके घर जाना सबसे अच्छा लगता है? वहाँ की दिनचर्या अलग कैसे होती है? लिखिए।

उत्तर-छुट्टियों में मुझे अपने मामा के घर जाना सबसे अच्छा लगता है; क्योंकि मामा-मामी का सहज स्नेह जहाँ मुझे उस घर की ओर खींचने लगता है, वहीं उनके गाँव का वातावरण, हरे-भरे खेत, फसलें, फलों से लदे आम के पेड़, प्रात:कालीन वातावरण में कलरव करते हुए पक्षी, बहती हुई नदी, उसमें किल्लोल करते हुए पशु-पक्षी मेरे मन को सहज ही आकर्षित कर लेते हैं।

वहाँ की दिनचर्या–मामा के घर पहुँचते ही मैं उनकी स्नेहिल दुनिया में डूब जाता हूँ। देर रात तक मामा-मामी से बतियाना और सुबह जल्दी उठकर उनके बच्चों के साथ बाग-बगीचों में घूमने जाना, पेड़-पौधों को निहारना, प्रात:कालीन वातावरण का आनन्द लेना, आम तोड़कर खाना और खिलाना, कुछ समय तक खेलना फिर घर आकर आपस में बातें करते हुए नहाना-धोना, जलपान करना, जरूरत अनुसार पास के बाजार से सामान लाना, खाना खाना आदि दोपहर पूर्व की दैनिक क्रियाएँ रहतीं। दोपहरी में गर्मी के कारण घर में ही रहकर

संस्कृत–कक्षा-8

रुचिरा (तृतीयो भागः)

मङ्गलम्

(1)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ 1॥ —**शुक्लयजुर्वेदः (34.1)**

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–जागते हुए का जो यह आत्मस्वरूप मन दूर तक जाता है, उसी प्रकार सोते हुए व्यक्ति का वही (मन दूर तक) जाता है। (वह मन) दूर तक जाने वाला एवं प्रकाशक इन्द्रियों (तेजसमूह) का एकमात्र प्रवर्तक है। वह मेरा मन शुभ विचारों वाला होवे।

(2)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्या-
न्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ 2॥ —**शुक्लयजुर्वेदः (34.6)**

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–जिस प्रकार श्रेष्ठ सारथि घोड़ों को इधर-उधर ले जाता है और लगामों के द्वारा घोड़ों को नियन्त्रित करता है, उसी प्रकार जो मन मनुष्यों को इधर-उधर ले जाता है, वह हृदय में स्थित, जरा रहित और वेगवान मेरा मन शुभ विचारों वाला होवे।

हिन्दी रूपान्तर

जो रहता है जाग्रत और दूर-दूर तक जाता है,
सोया रह कर भी ऐसे ही जा कर वापस आता है।
दूर-दूर वह जाने वाला सब तेजों का ज्योतिनिधान
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान्॥ 1॥

जो जन-जन को बागडोर से इधर-उधर ले जाता है,
चतुर सारथी ज्यों घोड़ों को इच्छित चाल चलाता है।
सदा प्रतिष्ठित हृदयदेश में अजर और अतिशय गतिमान्
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान्॥ 2॥

प्रथमः पाठः सुभाषितानि

पाठ-परिचय–'सुभाषित' शब्द 'सु + भाषित' इन दो शब्दों के मेल से सम्पन्न होता है। सु का अर्थ सुन्दर, मधुर तथा भाषित का अर्थ वचन है। इस तरह सुभाषित का अर्थ सुन्दर/मधुर वचन है। प्रस्तुत पाठ में सूक्तिमञ्जरी, नीतिशतकम्, मनुस्मृतिः, शिशुपालवधम्, पञ्चतन्त्रम् से रोचक और विचारपरक श्लोकों को संगृहीत किया गया है।

पाठ के श्लोकों का अन्वय, कठिन-शब्दार्थ एवं हिन्दी-भावार्थ–

गुणा गुणज्ञेषु ..... समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥ 1॥

अन्वयः–गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति, ते (गुणाः) निर्गुणं प्राप्य दोषाः भवन्ति। (यथा) नद्यः सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति, समुद्रम् आसाद्य (ताः) अपेयाः भवन्ति।

कठिन-शब्दार्थ–गुणज्ञेषु = गुणवानों में। **प्राप्य** = प्राप्त करके। **सुस्वादुतोयाः** = स्वादिष्ट जल वाली। **प्रभवन्ति** = उत्पन्न होती हैं। **समुद्रम् आसाद्य** = समुद्र में मिलकर।

हिन्दी-भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में गुणवान् के महत्त्व को बताते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार उत्पन्न होते समय नदी का जल मीठा एवं पीने योग्य होता है किन्तु समुद्र में मिलने पर वही जल खारा एवं पीने योग्य नहीं होता है, उसी प्रकार गुण भी गुणवान् में ही सद्गुण के रूप में रहते हैं किन्तु वे ही गुण गुणहीन व्यक्ति को प्राप्त करके दोष बन जाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि संगति के अनुसार ही गुण-दोष बनते हैं।

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः ..... परमं पशूनाम्॥ 2॥

अन्वयः–साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः (जनः) पुच्छविषाणहीनः साक्षात् पशुः (भवति)। तृणं न खादन् अपि जीवमानः, तद् पशूनां परमं भागधेयम्।

कठिन-शब्दार्थ–पुच्छविषाणहीनः = पूँछ और सींग के बिना। **तृणं** = घास। **खादन् अपि** = खाते हुए भी। **जीवमानः** = जिन्दा रहता हुआ। **भागधेयम्** = सौभाग्य है।

हिन्दी-भावार्थ–प्रस्तुत पद्य में विद्या के महत्त्व को बताते हुए कहा गया है कि साहित्य, संगीत और कला से रहित मनुष्य पूँछ और सींग से रहित साक्षात् पशु है। घास न खाते हुए भी वह (मनुष्य) जीवित है, यह पशुओं का परम सौभाग्य है। अर्थात् यदि मनुष्य घास भी खाने लगे तो पशुओं को घास भी खाने को प्राप्त नहीं होगी।

लुब्धस्य नश्यति यशः ..... प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य॥ 3॥

अन्वयः–लुब्धस्य यशः नश्यति, पिशुनस्य मैत्री, नष्टक्रियस्य कुलम्, अर्थपरस्य धर्मः, व्यसनिनः विद्याफलम्, कृपणस्य सौख्यम्, (तथा च) प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य राज्यम् (नश्यति)।

कठिन-शब्दार्थ–लुब्धस्य = लोभी का। **पिशुनस्य** = चुगलखोर की। **नष्टक्रियस्य** = नष्ट क्रिया वाले का। **अर्थपरस्य** = धन-परायण का। **व्यसनिनः** = बुरी लत वालों की। **कृपणस्य** = कंजूस का। **सौख्यम्** = सुख। **नश्यति** = नष्ट हो जाता है।

हिन्दी-भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में अनेक प्रकार के दुर्गुणों को त्यागने की प्रेरणा देते हुए तथा उन दुर्गुणों के दुष्परिणाम का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि लोभी व्यक्ति का यश, चुगलखोर की मित्रता, कर्महीन (निकम्मे) का कुल, केवल धन के लालची (स्वार्थी) का धर्म, व्यसनी का विद्या-फल, कंजूस का सुख तथा अभिमानी मन्त्रियों वाले राजा का राज्य नष्ट हो जाता है। अतः इन दुर्गुणों को त्याग देना चाहिए।

पीत्वा रसं तु ..... मधुरसूक्तरसं सृजन्ति॥ 4॥

अन्वयः–असौ मधुमक्षिका कटुकं मधुरं तु रसं समानं पीत्वा माधुर्यमेव जनयेत्। तथैव सन्तः सज्जनदुर्जनानां वचः समं श्रुत्वा मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।

कठिन-शब्दार्थ–मधुमक्षिका = मधुमक्खी। **कटुकं** = कड़वा। **पीत्वा** = पीकर। **जनयेत्** = पैदा करती/निर्माण करती है। **तथैव** = वैसे ही। **सन्तः** = सज्जन। **सृजन्ति** = निर्माण करते हैं।

हिन्दी-भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में सज्जनों की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार मधुमक्खी कड़वे एवं मीठे दोनों प्रकार के रस का पान करके भी केवल मधुरता (शहद) को ही प्रदान करती है, उसी प्रकार सज्जन लोग सज्जनों एवं दुर्जनों के वचनों को समान रूप से ग्रहण करके भी केवल मधुर सूक्त-वचन की ही रचना करते हैं अर्थात् मधुर वचन ही बोलते हैं।

विज्ञान–कक्षा 8

1. फसल उत्पादन एवं प्रबंध

पाठ-सार–(1) सजीव भोजन से प्राप्त ऊर्जा का उपयोग विभिन्न जैविक प्रक्रमों में करते हैं। हमें भोजन पौधों अथवा जन्तुओं या दोनों से प्राप्त होता है।

(2) एक विशाल जनसंख्या को भोजन प्रदान करने के लिए विशिष्ट कृषि पद्धतियों को अपनाया जाता है।

(3) किसी स्थान पर उगाए जाने वाले एक ही प्रकार के पौधों को फसल कहते हैं। भारत में यह मुख्यत: रबी तथा खरीफ़ दो प्रकार की होती है।

(4) फसल उगाने के लिए किसान को निम्नलिखित कार्यकलाप करने पड़ते हैं–(i) मिट्टी तैयार करना (ii) बुआई (iii) खाद एवं उर्वरक देना (iv) सिंचाई (v) खरपतवार से सुरक्षा (vi) कटाई (vii) भण्डारण।

(5) फसल के लिए मिट्टी को तैयार करने के लिए कृषि औजारों का उपयोग करते हैं।

(6) बीजों की अच्छी किस्म का चयन करके उन्हें उचित गहराई तथा उनके बीच उचित दूरी रखकर बोया जाता है। यह कार्य सीड-ड्रिल से करते हैं।

(7) मिट्टी के पोषक स्तर को बनाये रखने के लिए खाद एवं उर्वरक का उपयोग किया जाता है।

(8) फसलों की नयी किस्मों के आने से रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में बहुत वृद्धि हुई है।

(9) समय-समय पर खेत में सिंचाई करते रहने से उत्पादन में वृद्धि होती है। इसके लिए छिड़काव तंत्र व ड्रिप तंत्र का उपयोग करना चाहिए।

(10) खरपतवार (weeds) हटाने को निराई (weeding) कहते हैं। पकी हुई फसल की हाथों या मशीन से कटाई करनी चाहिए।

(11) दानों को भूसे से अलग करना थ्रेसिंग कहलाता है।

(12) बीजों को पीड़कों एवं सूक्ष्मजीवों से संरक्षित करने के लिए उचित भण्डारण आवश्यक है।

(13) पशुओं को पालकर उनसे खाद्य पदार्थ प्राप्त करना पशुपालन कहलाता है।

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ 1

प्रश्न 1. हम खुरपी, दरांती, बेलचा, हल इत्यादि औजारों का उपयोग कहाँ और कैसे करते हैं?

उत्तर–हम खुरपी, दरांती, बेलचा, हल इत्यादि औजारों का उपयोग खेतों में कृषि कार्य में करते हैं।

खुरपी–इसकी सहायता से हम क्यारी बनाने के लिए मिट्टी खोदते हैं तथा खरपतवार को भी हटाते हैं।

दरांती–इसकी सहायता से हम फसल काटते हैं।

बेलचा–इसका प्रयोग मिट्टी, अनाज आदि को उठाकर टोकरों में भरने के लिए किया जाता है।

हल–जुताई, भूमि में खाद/उर्वरक मिलाने तथा मिट्टी खुरचने के लिए हल का उपयोग किया जाता है।

प्रश्न 2. हम अपने देश के इतने अधिक लोगों को भोजन किस प्रकार उपलब्ध करा सकते हैं?

उत्तर–हम अपने देश के इतने अधिक लोगों को भोजन इसके बड़े स्तर पर एवं नियमित उत्पादन, उचित प्रबन्धन तथा वितरण द्वारा उपलब्ध करा सकते हैं।

पृष्ठ 2

प्रश्न 3. धान को शीत ऋतु में क्यों नहीं उगाया जा सकता?

उत्तर–धान को बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। इसलिए इसे शीत ऋतु में नहीं उगाया जा सकता। इसे वर्षा ऋतु में उगाते हैं।

पृष्ठ 4

प्रश्न 4. बीजों को पानी में डालकर रखने पर कुछ मिनट पश्चात् कुछ बीज पानी के ऊपर क्यों तैरने लगते हैं?

उत्तर–कुछ बीज क्षतिग्रस्त होते हैं जिससे वे खोखले हो जाते हैं। इस कारण वे हल्के होते हैं और पानी पर तैरने लगते हैं।

पृष्ठ 5

प्रश्न 5. पौधशाला (नर्सरी) में पौधे छोटे-छोटे थैलों में क्यों रखे जाते हैं?

उत्तर–धान जैसे कुछ पौधों के बीजों को पहले पौधशाला में उगाया जाता है। पौध तैयार हो जाने पर उन्हें हाथों द्वारा

खेत में रोपित किया जाता है। कुछ वनीय पौधे एवं पुष्पी पौधे भी पौधशाला में उगाए जाते हैं।

प्रश्न 6. कुछ पौधे अन्य पौधों की तुलना में ज्यादा अच्छी तरह से क्यों उगते हैं?

उत्तर–जिन पौधों को पानी, खनिज पदार्थ, खाद तथा उर्वरक पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं वे उन पौधों की अपेक्षा, जिन्हें ये पदार्थ उचित मात्रा में न मिले हों, ज्यादा अच्छी तरह से उगते हैं।

पृष्ठ 10

प्रश्न 7. खेत में फसल के साथ कुछ अन्य पौधे भी उग रहे हैं। क्या ये अन्य पौधे विशेष उद्देश्य के लिए उगाये गए हैं?

उत्तर–नहीं, ये अन्य पौधे किसी विशेष उद्देश्य के लिए नहीं उगाये गये हैं। ये अवांछित पौधे होते हैं जो फसल के साथ प्राकृतिक रूप से उग जाते हैं। इन्हें खरपतवार कहते हैं।

प्रश्न 8. क्या खरपतवारनाशी का प्रभाव इसको छिड़कने वाले व्यक्ति पर भी पड़ता है?

उत्तर–हाँ, खरपतवारनाशी का प्रभाव इसको छिड़कने वाले व्यक्ति के स्वास्थ्य पर पड़ सकता है क्योंकि ये विषैले रसायन होते हैं। अत: छिड़काव करते समय उन्हें अपना मुँह एवं नाक कपड़े से ढक लेना चाहिए।

पृष्ठ 11

प्रश्न 9. अनाज रखे लोहे के ड्रम में नीम की सूखी पत्तियाँ क्यों रखते हैं?

उत्तर–अनाज रखे लोहे के ड्रम में नीम की सूखी पत्तियाँ अनाज को कीटों से सुरक्षित रखने के लिए रखी जाती हैं।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. उचित शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

तैरने, जल, फसल, पोषक, तैयारी

(क) एक स्थान पर एक ही प्रकार के बड़ी मात्रा में उगाए गए पौधों को.....कहते हैं।

(ख) फसल उगाने से पहले प्रथम चरण में मिट्टी की .....होती है।

(ग) क्षतिग्रस्त बीज जल की सतह पर.....लगेंगे।

(घ) फसल उगाने के लिए पर्याप्त सूर्य का प्रकाश एवं मिट्टी से.....तथा.....आवश्यक हैं।

उत्तर–(क) फसल (ख) तैयारी (ग) तैरने (घ) जल, पोषक तत्त्व।

प्रश्न 2. 'कॉलम A' में दिए गए शब्दों का मिलान 'कॉलम B' से कीजिए–

कॉलम A	**कॉलम B**
(i) खरीफ फसल	(a) मवेशियों का चारा
(ii) रबी फसल	(b) यूरिया एवं सुपर फास्फेट
(iii) रासायनिक उर्वरक	(c) पशु अपशिष्ट, गोबर, मूत्र एवं पादप अवशेष
(iv) कार्बनिक खाद	(d) गेहूँ, चना, मटर
	(e) धान एवं मक्का

उत्तर–(i) e (ii) d (iii) b (iv) c

प्रश्न 3. निम्न के दो-दो उदाहरण दीजिए–

(क) खरीफ फसल (ख) रबी फसल।

उत्तर–(क) खरीफ फसल–(1) धान (2) मक्का। (ख) रबी फसल–(1) गेहूँ (2) चना।

प्रश्न 4. निम्न पर अपने शब्दों में एक-एक पैराग्राफ लिखिए–

(क) मिट्टी तैयार करना (ख) बुआई
(ग) निराई (घ) थ्रेशिंग।

उत्तर–(क) मिट्टी तैयार करना (Preparation of Soil)–फसल उगाने से पहले मिट्टी तैयार की जाती है। इसके लिए भूमि की मिट्टी को उलट-पलट कर पोली करते हैं, इससे जड़ें भूमि में गहराई तक जा सकती हैं। यह प्रक्रिया जुताई कहलाती है। इसे हल चलाकर करते हैं। ढीली मिट्टी के छिद्रों में उपस्थित वायु से फसल के पौधों की जड़ें श्वसन के लिए पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन भी प्राप्त कर लेती हैं। मिट्टी को उलटने-पलटने तथा पोला करने से पोषक पदार्थ ऊपर आ जाते हैं जिनका उपयोग पौधे आसानी से कर लेते हैं।

(ख) बुआई (Sowing)–फसलों के पौधे उगाने के लिए खेत की मिट्टी में बीज डालने की प्रक्रिया को बुआई कहते हैं। खेत की भूमि को हल से जोतने, समतल करने तथा खाद डालने के बाद उसमें उगाई जाने वाली फसल के बीज बोए जाते हैं। खेतों में बुआई के दो तरीके हैं–

(i) परम्परागत औजार द्वारा–यह कीप के आकार का होता है। बीजों को कीप के अन्दर डालने पर यह दो या तीन नुकीले सिरे वाले पाइपों से गुजरते हैं। ये सिरे मिट्टी को भेदकर बीज को स्थापित कर देते हैं।

(ii) सीड ड्रिल द्वारा–सीड ड्रिल नामक बीज बोने के यंत्र से भी बुआई की जाती है। इसके द्वारा बीजों में समान दूरी तथा गहराई बनी रहती है। बीजों की गुणवत्ता तथा बीज बोने का तरीका दोनों ही फसल उपजाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(ग) निराई (Weeding)–खेत में से खरपतवार हटाने को निराई कहते हैं। निराई खेतों में आवश्यक है क्योंकि खरपतवार जल, पोषक, जगह और प्रकाश की स्पर्धा कर

गणित–कक्षा 8

1. परिमेय संख्याएँ

पाठ सार

(1) प्राकृत संख्याएँ–गिनती की संख्याएँ 1, 2, 3, 4..... प्राकृत संख्याएँ कहलाती हैं।

(2) पूर्ण संख्याएँ–सभी प्राकृत संख्याओं के साथ 0 अर्थात् 0, 1, 2, 3, 4, ... पूर्ण संख्याएँ कहलाती हैं।

(3) पूर्णांक–पूर्ण संख्याओं के साथ ऋणात्मक चिह्न वाली गिनती की संख्याएँ ..., –3, –2, –1, 0, 1, 2, 3.... पूर्णांक कहलाती हैं।

(4) परिमेय संख्याएँ–ऐसी संख्या परिमेय संख्या कहलाती है जिसे $\frac{p}{q}$ के रूप में लिखा जा सकता हो, जहाँ p और q पूर्णांक हैं तथा $q \neq 0$ है।

(5) परिमेय संख्याएँ योग, व्यवकलन (बाकी) तथा गुणन की संक्रियाओं के अन्तर्गत संवृत्त हैं।

(6) परिमेय संख्याओं के लिए योग की संक्रिया क्रम विनिमेय है अर्थात् a तथा b के लिए $a + b = b + a$।

(7) परिमेय संख्याओं के लिए गुणन क्रम विनिमेय है अर्थात् a तथा b के लिए $a \times b = b \times a$।

(8) परिमेय संख्याओं के लिए योग संक्रिया साहचर्य है अर्थात् तीन परिमेय संख्याओं a, b तथा c के लिए $a + (b + c) = (a + b) + c$।

(9) परिमेय संख्याओं के लिये व्यवकलन साहचर्य नहीं है अर्थात् किन्हीं तीन परिमेय संख्याओं a, b तथा c के लिये $a – (b – c) \neq (a – b) – c$।

(10) परिमेय संख्याओं के लिए गुणन संक्रिया साहचर्य है अर्थात् किन्हीं तीन परिमेय संख्याओं a, b तथा c के लिए $a \times (b \times c) = (a \times b) \times c$।

(11) परिमेय संख्याओं के लिये भाग साहचर्य नहीं है अर्थात् किन्हीं तीन परिमेय संख्याओं a, b तथा c के लिए $a \div (b \div c) \neq (a \div b) \div c$।

(12) परिमेय संख्याओं के लिए परिमेय संख्या शून्य एक योज्य तत्समक है अर्थात् किसी परिमेय संख्या में शून्य जोड़ने पर योग वही परिमेय संख्या होगी।

(13) परिमेय संख्याओं के लिए परिमेय संख्या 1 गुणनात्मक तत्समक है अर्थात् किसी परिमेय संख्या को 1 से गुणा करने पर वही संख्या गुणनफल के रूप में प्राप्त होगी।

(14) परिमेय संख्याओं के योग एवं व्यवकलन पर गुणन की वितरकता सभी परिमेय संख्याओं a, b और c के लिए

$$a (b + c) = ab + ac$$
$$a (b – c) \; ab – ac$$

(15) दी हुई दो परिमेय संख्याओं के मध्य अपरिमित परिमेय संख्याएँ होती हैं। दो परिमेय संख्याओं के मध्य परिमेय संख्याएँ ज्ञात करने में माध्य की अवधारणा सहायक है।

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ 2

प्रश्न 1. प्राकृत संख्याओं के लिए सभी चार संक्रियाओं के अन्तर्गत संवृत्त गुण की जाँच कीजिए।

उत्तर–(1) योग संक्रिया–प्राकृत संख्याएँ योग संक्रिया के अन्तर्गत संवृत्त हैं अर्थात् a और b दो प्राकृत संख्याएँ हैं, तो $a + b$ भी प्राकृत संख्या होगी।

उदाहरण द्वारा जाँच–

प्राकृत संख्या (a)	प्राकृत संख्या (b)	योग ($a + b$)	($a + b$) प्राकृत संख्या है अथवा नहीं
3	2	3 + 2 = 5	हाँ
9	7	9 + 7 = 16	हाँ
11	13	11 + 13 = 24	हाँ
25	28	25 + 28 = 53	हाँ

(2) व्यवकलन संक्रिया–प्राकृत संख्याएँ व्यवकलन संक्रिया के अन्तर्गत संवृत्त नहीं हैं। यदि a और b दो प्राकृत संख्याएँ हैं, तो $a > b$ होने पर $a - b$ एक प्राकृत संख्या होगी किन्तु $a < b$ अथवा $a = b$ होने पर प्राप्त संख्या प्राकृत संख्या नहीं होगी।

उदाहरण द्वारा जाँच–

प्राकृत संख्या (a)	प्राकृत संख्या (b)	व्यवकलन ($a - b$)	($a - b$) प्राकृत संख्या है अथवा नहीं
3	2	3 – 2 = 1	हाँ
9	7	9 – 7 = 2	हाँ
11	11	11 – 11 = 0	नहीं
25	28	25 – 28 = –3	नहीं

(3) गुणन संक्रिया–प्राकृत संख्याएँ गुणन संक्रिया के अन्तर्गत संवृत्त हैं अर्थात् a और b दो प्राकृत संख्याएँ हैं, तो उनका गुणनफल भी प्राकृत संख्या होगी।

उदाहरण द्वारा जाँच–

प्राकृत संख्या (a)	प्राकृत संख्या (b)	गुणनफल ($a \times b$)	($a \times b$) प्राकृत संख्या है अथवा नहीं
3	2	3 × 2 = 6	हाँ
9	7	9 × 7 = 63	हाँ
11	13	11 × 13 = 143	हाँ
28	1	28 × 1 = 28	हाँ

(4) भाग संक्रिया–प्राकृत संख्याएँ भाग संक्रिया के अन्तर्गत संवृत्त नहीं हैं।

उदाहरण द्वारा जाँच–

प्राकृत संख्या (a)	प्राकृत संख्या (b)	भागफल ($a \div b$)	($a \div b$) प्राकृत संख्या है अथवा नहीं
3	3	3 ÷ 3 = 1	हाँ
9	3	9 ÷ 3 = 3	हाँ
11	3	11 ÷ 3 = ?	नहीं
3	12	3 ÷ 12 = ?	नहीं

पृष्ठ 5 — प्रयास कीजिए

प्रश्न–निम्नलिखित सारणी में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

संख्याएँ	अन्तर्गत संवृत्त हैं			
	योग के	व्यवकलन के	गुणन के	भाग के
परिमेय संख्याएँ	हाँ	हाँ	.....	नहीं
पूर्णांक	.....	हाँ	.....	नहीं
पूर्ण संख्याएँ	.....	.....	हाँ	.....
प्राकृत संख्याएँ	.....	नहीं	.....	.....

ह ल –

संख्याएँ	अन्तर्गत संवृत्त हैं			
	योग के	व्यवकलन के	गुणन के	भाग के
परिमेय संख्याएँ	हाँ	हाँ	**हाँ**	नहीं
पूर्णांक	**हाँ**	हाँ	**हाँ**	नहीं
पूर्ण संख्याएँ	**हाँ**	**नहीं**	हाँ	**नहीं**
प्राकृत संख्याएँ	**हाँ**	**नहीं**	**हाँ**	नहीं

क्रम विनिमेयता

प्रश्न 1. निम्नलिखित सारणी के रिक्त स्थानों को भरते हुए विभिन्न संक्रियाओं के अन्तर्गत पूर्ण संख्याओं की क्रम विनिमेयता का स्मरण कीजिए–

संक्रिया	संख्याएँ	टिप्पणी
योग	$0 + 7 = 7 + 0 = 7$ $2 + 3 = \ldots + \ldots = \ldots$ किन्हीं दो पूर्ण संख्याओं a तथा b के लिए $a + b = b + a$	योग क्रम विनिमेय है
व्यवकलन (घटाना)	.....	व्यवकलन क्रम विनिमेय नहीं है।
गुणन	.....	गुणन क्रम विनिमेय है।
भाग	.....	भाग क्रम विनिमेय नहीं है।

सामाजिक विज्ञान–कक्षा-8

हमारे अतीत-III (इतिहास)

अध्याय-1. प्रारंभिक कथन : कैसे, कब और कहाँ

पाठ-सार

(1) इतिहास अलग-अलग समय पर आने वाले बदलावों के बारे में ही होता है। इसका संबंध इस बात से है कि अतीत में चीजें किस तरह की थीं और उनमें क्या बदलाव आए हैं।

(2) समय को हमेशा साल या महीनों के पैमाने पर ही नहीं देखा जा सकता। ऐसी प्रक्रियाओं के लिए कोई तारीख तय करना गलत होता है जो एक लम्बे समय तक चलती रहती हैं।

(3) एक समय था जब युद्ध तथा बड़ी-बड़ी घटनाओं के ब्यौरों को ही इतिहास माना जाता था। अब इतिहासकार बहुत सारे दूसरे मुद्दों और दूसरे सवालों के बारे में भी लिखने लगे हैं।

(4) स्कॉटलैण्ड के अर्थशास्त्री तथा राजनीतिक दार्शनिक जेम्स मिल ने सन् 1817 में तीन विशाल खण्डों में 'ब्रिटिश भारत का इतिहास' (ए हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इण्डिया) नामक पुस्तक लिखी। इसमें उन्होंने भारतीय इतिहास को तीन काल खंडों—(1) हिन्दू, (2) मुस्लिम तथा (3) ब्रिटिश—में बाँटा था।

(5) भारत पर अंग्रेजों के शासन में लोगों के पास समानता, स्वतन्त्रता या मुक्ति नहीं थी। न ही यह आर्थिक विकास और प्रगति का दौर था। अनेक इतिहासकार इस युग को 'औपनिवेशिक युग' कहते हैं।

(6) अंग्रेजी शासन द्वारा तैयार किये गये सरकारी रिकार्ड इतिहासकारों के लिए एक प्रमुख स्रोत हैं। लेकिन इनसे हमें यही पता चलता है कि सरकारी अफसर क्या सोचते थे, उनकी दिलचस्पी किन चीजों में थी और बाद के लिए वे किन चीजों को बचाए रखना चाहते थे। इन रिकार्ड्स से हमें यह समझने में हमेशा मदद नहीं मिलती कि देश के दूसरे लोग क्या महसूस करते थे और उनकी कार्रवाइयों की क्या वजह थी?

(7) आम जनता के बारे में जानने के लिए हमें सरकारी रिकार्ड्स के अतिरिक्त अन्य स्रोतों, जैसे-डायरियों, तीर्थ-यात्रियों व यात्रियों के संस्मरण, महत्त्वपूर्ण लोगों की आत्मकथाएँ तथा स्थानीय बाजारों में बिकने वाली लोकप्रिय पुस्तक-पुस्तिकाएँ महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं।

(8) लेकिन आदिवासी, किसान, खदानों में काम करने वाले मजदूर या सड़क पर जिंदगी गुजारने वाले गरीब किस तरह के अनुभवों से गुजर रहे थे, की जानकारी आत्मकथाओं और दूसरे स्रोतों से भी नहीं मिल पाती है।

पाठगत प्रश्न

गतिविधि (पृष्ठ 1)

प्रश्न–चित्र 1 (पाठ्यपुस्तक) को ध्यान से देखें। यह चित्र किस प्रकार उपनिवेशवाद का बोध कराता है?

उत्तर–इस चित्र में ब्राह्मणों को ब्रिटिश सत्ता की प्रतीक ब्रिटेनिया को शास्त्र भेंट करते हुए दर्शाया गया है, वे उसे अपने प्राचीन पवित्र ग्रन्थ सौंप रहे हैं। इससे पता चल रहा है कि ब्रिटिश सत्ता ने भारत पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है तथा उससे भारतीय संस्कृति की रक्षा करने का आग्रह किया जा रहा है।

गतिविधि (पृष्ठ 7)

प्रश्न–स्रोत 1 और 2 को देखें। क्या आपको प्रतिवेदनों के स्वरूप में कोई फर्क दिखाई देता है। बताएँ कि आपको क्या फर्क लगता है?

उत्तर–हमें दोनों प्रकार के प्रतिवेदनों के स्वरूप में मौलिक फर्क दिखाई देता है। दोनों प्रकार के प्रतिवेदनों का स्वरूप अलग-अलग प्रकार का है। जहाँ स्रोत 1 में सरकारी कर्मचारियों द्वारा गृह विभाग को रिपोर्टें भेजी गई हैं, वहीं स्रोत 2 में अखबार द्वारा दी गई रिपोर्ट है। स्रोत 1 की रिपोर्ट में विद्रोहियों के विरुद्ध की गयी कार्यवाही का वर्णन किया गया है। यह रिपोर्ट उन कारणों को भी नहीं बताती

जिनकी वजह से ऐसी स्थिति आई। साथ ही यह रिपोर्ट उन कारणों को भी नहीं बताती है कि ऐसी स्थिति आई क्यों थी। यह विद्रोहियों के पक्ष को उजागर नहीं करती है। दूसरी ओर, स्रोत 2 की रिपोर्ट मीडिया के निष्पक्ष रिपोर्टिंग का एक उदाहरण है। इसमें वर्णन है कि पुलिस ने हड़ताल क्यों की थी, हड़ताल कहाँ और कैसे हुई थी। अत: यह प्रतिवेदन अधिक वास्तविक है। यह मानवतावाद के विरुद्ध सरकार की प्रवृत्ति को उजागर करता है।

आइए कल्पना करें (पृष्ठ 8)

प्रश्न–कल्पना कीजिए कि आप इतिहासकार हैं। आप यह पता लगाना चाहते हैं कि आजादी मिलने के बाद एक दुर्गम आदिवासी इलाके की खेती में क्या बदलाव आए हैं। इन जानकारियों को ढूँढ़ने के विभिन्न तरीकों की सूची बनाएँ।

उत्तर–किसी दुर्गम आदिवासी इलाके की खेती में आए परिवर्तन के बारे में जानकारियाँ एकत्र करने के कुछ तरीके निम्न प्रकार हैं—

(1) सम्बन्धित क्षेत्र के कलेक्टर, तहसीलदार आदि के कार्यालय से रिपोर्ट एकत्र करना।

(2) पत्रिका, समाचार-पत्र आदि से जानकारियाँ एकत्र करना।

(3) सम्बन्धित राज्य के कृषि विभाग से जानकारियाँ एकत्र करना।

(4) उस क्षेत्र में स्वयं जाकर अवलोकन एवं कृषकों से साक्षात्कार के माध्यम से जानकारियाँ एकत्र करना।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

फिर से याद करें–

प्रश्न 1. सही और गलत बताएँ–

(क) जेम्स मिल ने भारतीय इतिहास को हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, तीन काल खण्डों में बाँट दिया था।

(ख) सरकारी दस्तावेजों से हमें ये समझने में मदद मिलती है कि आम लोग क्या सोचते हैं।

(ग) अंग्रेजों को लगता था कि सही तरह शासन चलाने के लिए सर्वेक्षण महत्त्वपूर्ण होते हैं।

उत्तर–(क) गलत (**स्पष्टीकरण**–जेम्स मिल ने भारतीय इतिहास को हिन्दू, मुस्लिम, **ब्रिटिश** तीन काल खण्डों में बाँटा था।) (ख) गलत (ग) सही।

आइए विचार करें–

प्रश्न 2. जेम्स मिल ने भारतीय इतिहास को जिस तरह काल-खण्डों में बाँटा है, उसमें क्या समस्याएँ हैं?

उत्तर–जेम्स मिल ने भारतीय इतिहास को तीन काल-खण्डों—हिन्दू, मुस्लिम तथा ब्रिटिश—में बाँटा। उसके अनुसार भारत में अंग्रेजों के आने से पहले यहाँ हिन्दू तथा मुस्लिम तानाशाहों का ही राज चलता था। जेम्स मिल द्वारा भारतीय इतिहास के इस तरह किये गये कालखण्डों के विभाजन में अनेक समस्याएँ हैं, जो निम्न प्रकार हैं—

(1) जेम्स मिल द्वारा किया गया काल-खण्डों का यह विभाजन धर्म पर आधारित था जो उचित नहीं है।

(2) उसने हिन्दू तथा मुस्लिम काल को धार्मिक बैर, जातिगत बन्धन तथा अन्धविश्वासों से भरपूर माना तथा अंग्रेजी शासन को प्रगति तथा सभ्यता का प्रतीक माना।

(3) इतिहास के किसी दौर को 'हिन्दू' या 'मुसलमान' दौर नहीं कहा जा सकता। किसी भी दौर में सभी धर्म एक साथ चलते हैं।

(4) प्राचीन भारत में भी सभी शासकों का एक ही धर्म नहीं होता था।

(5) विभाजन का यह आधार सच्चाई से बहुत दूर था। इसका उद्देश्य लोगों को विभाजित कर उनमें फूट डालना था।

प्रश्न 3. अंग्रेजों ने सरकारी दस्तावेजों को किस तरह सुरक्षित रखा?

उत्तर–अंग्रेजों ने सरकारी दस्तावेजों को सुरक्षित रखने के लिए सभी शासकीय संस्थानों में अभिलेख कक्ष बनवाये। उन्होंने तहसील के दफ्तरों, कलेक्टरेट, कमिश्नर के दफ्तर, प्रान्तीय सचिवालय, कचहरी आदि सभी के लिए उनके पृथक्-पृथक् रिकॉर्ड रूम बनवाये, जिनमें सरकारी दस्तावेजों को सुरक्षित रखा जाता था। महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों को बचाकर रखने के लिए अभिलेखागार (आर्काइव) तथा संग्रहालय जैसे संस्थान भी बनाये गये। उन्नीसवीं सदी के शुरुआती वर्षों में सुलेखनवीसों द्वारा दस्तावेजों की नकलें बनवाई जाती थीं। बाद में छपाई तकनीक द्वारा सरकारी दस्तावेजों की अनेक प्रतियाँ बनाई जाने लगीं।

प्रश्न 4. इतिहासकार पुराने अखबारों से जो जानकारी जुटाते हैं, वह पुलिस की रिपोर्टों में उपलब्ध जानकारी से किस तरह अलग होती है?

उत्तर–इनमें मुख्य अन्तर निष्पक्षता का होता है। सामान्यत: अखबार की रिपोर्ट गलत नहीं होती। इन रिपोर्टों में घटनाओं का सही विवरण दिया जाता है। अखबार घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत नहीं करते हैं। ये घटनाओं का सही, विस्तृत और निष्पक्ष विवरण प्रस्तुत करते हैं। दूसरी तरफ पुलिस की रिपोर्टों में उपलब्ध जानकारी के पक्षपातपूर्ण होने की सम्भावना होती है। कई बार ये रिपोर्ट्स वरिष्ठ अधिकारियों के दबाव में या उन्हें खुश करने के लिए लिखी जाती हैं। इन रिपोर्टों में जाँच अधिकारी व्यक्तिगत रूप से भी पक्षपात कर सकते हैं।

अत: यदि इतिहासकार केवल पुलिस रिपोर्टों से उपलब्ध जानकारी पर आधारित रहे तो सम्भव है कि गलत इतिहास प्रस्तुत होवे।